OUR PUBLICATIONS

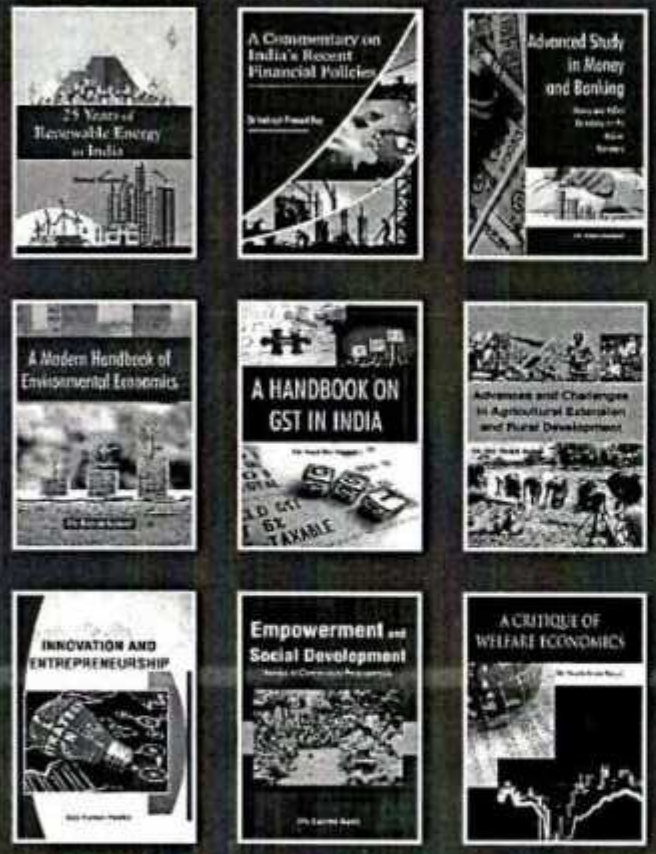

Global Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 2 मार्च-अप्रैल 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

प्रो. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. पूरन चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

63

वर्ष : 13 अंक : 2 □ मार्च-अप्रैल, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. पुनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एम. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. अनेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. रमवेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 40564514, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

संदेशकाव्य-परम्परा में 'मेघदूतम्' और 'संदेशरासक' : एक तुलनात्मक विवेचन–नर्मदा 138
तत्त्वार्थसूत्र में वर्णित जैन जीवन शैली द्वारा युगीन समस्याओं के समाधान–विकास जैन 141
भारतीय संस्कृति की रीढ़ जनक की बेटियां–डॉ० सविता डहेरिया 144
हरिसुमन बिष्ट के कथा-साहित्य में चित्रित दलित वर्ग–डॉ० नवीन चन्द्र 147
सूचना के अधिकार के क्रियान्वयन की प्रभावशीलता का स्तर: (रीवा के विशेष सन्दर्भ में)
–डॉ० अमरजीत कुमार सिंह; गोकरण प्रसाद कुशवाहा 151
दलित साहित्य और साहित्यिकता–कमल किशोर कण्डावरिया 157
मृदुला सिन्हा के कथा-साहित्य में वर्णित सामाजिक समस्याएँ–डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा; डॉ० सुमेधा शर्मा 159
रामनगर क्षेत्र का व्यापारिक महत्व: एक ऐतिहासिक अध्ययन–कु० सीमा 162
आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में कपिलधारा कूप योजना का हितग्राहियों के आर्थिक विकास में योगदान का अध्ययन
(सरदारपुर तहसील के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ. डुंगरसिंह मुजाल्दा 164
स्नातक स्तर पर सामान्य एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम शैली प्राथमिकताओं एवं व्यक्तित्व
शीलगुणों का अध्ययन; डॉ० पूर्णिमा नराणियां 174
छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं नगरीय लिंगानुपात में असमानता–डॉ० आर०एन० यादव; प्रो. ए. श्रीराम 182
समकालीन लोकतांत्रिक समस्याओं के विभिन्न स्वरूप व समाधान–डॉ० आरती यादव 188
कोशी क्षेत्र में तालाब, चौर और मोईन की उपयोगिता एवं महत्व–डॉ० मो० रफत परवेज 191
अपना मोर्चा उपन्यास में वर्णित छात्र आन्दोलन–सुखबीर कौर 195
मुरिया जनजाति का परम्परागत शिक्षा केन्द्र: घोटुल–डॉ० बन्सो नुरूटी; पुरोहित कुमार सोरी 197
बुद्धकालीन स्त्रियों की राजनीति में भूमिका–डॉ० अजय कुमार सिंह 202
विजय दान देथा के कथा साहित्य में नारी–डॉ० विदुषी आमेटा; भूमिका 204
उच्च शिक्षा में छात्राओं की खेलों में सहभागिता की स्थिति का अध्ययन (छिन्दवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में)
–कु० सायमा सरदेशमुख; डॉ० रवि कुमार 207
नागरिकों को लेकर राष्ट्रीय मुद्दों व नए मीडिया का अध्ययन (गुरूग्राम लोकसभा क्षेत्र के संदर्भ में)–हिमांशु छावड़ा 211
माध्यमिक स्तर के विकासात्मक शिक्षा में समस्याएँ एवं संभावनाएँ–डॉ० शोभना झा; डॉ० संजीत कुमार साहू; डॉ० राकेश कुमार डेविड 216
आदिवासी जीवन संघर्ष और साहित्य–डॉ० ओम प्रकाश सैनी 219
कारावास की समस्या बनाम पीछे छूटे बच्चे–डॉ० रेखा ओझा 224
कृषि विकास एवं वित्तीय समावेशन में किसान क्रेडिट कार्ड की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ. रतन लाल;
डॉ० विवेक सिंह 229
दक्षिण एशिया में चीन के बढ़ते कदमों के बीच भारत की पहले, पड़ोसी की नीति–हिमांशु यादव 236
असगर वजाहत के उपन्यासों में अभिव्यक्त ''साम्प्रदायिकता''–माया देवी; डॉ० मृदुल जोशी 240
निजता एवं वर्तमान सूचना क्रांति: एक विश्लेषण–रूबीना; डॉ० कैलाश चन्द्र 244
झुग्गी झोपड़ी में निवासरत महिलाओं की समस्या (बिलासपुर शहर के विशेष संदर्भ में)–कु० आरती तिर्की; डॉ० ऋचा यादव 247
आर्यसमाज की हिंदी पत्रकारिता और स्वदेशी जागरण–विरेन्द्र कुमार 251
मौलाना अबुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचार–डॉ० बृजेश कुमार पाण्डेय 256
उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना–डॉ. विभा मिश्रा 259
अशिक्षा का जनजातीय जीवन पर प्रभाव और उसकी औपन्यासिक अभिव्यक्ति–डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय 262
ग्रामीण दलित महिलाओं के सशक्तिकरण में कल्याणकारी योजनाओं का योगदान–रविन्द्र कुमार 265
बागेश्वर जनपद के ग्राम पुरड़ा की महिलाओं की सामाजिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–राखी किशोर 268
मूल्य शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में बौद्ध कालीन शिक्षा प्रणाली की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता–डॉ. ईश्वर चन्द्र त्रिपाठी; बिपिन कुमार 274
अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बालकों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन–शक्ति सिंह 277
परास्नातक स्तर के नगरीय एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन
–डॉ. प्रेमचन्द्र यादव; शिवाश्रेय यादव 280

आदिवासी जीवन संघर्ष और साहित्य

डॉ० ओम प्रकाश सैनी

(डी.लिट्) एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल, हरियाणा

भूमिका: आदिवासी विमर्श पर बात करने से पहले हमें आदिवासी और जनजाति के बीच अंतर समझना होगा तभी आदिवासियों के प्रति न्याय हो सकेगा। आदिवासी और जनजाति के बीच पहला सौधा-सा अंतर है कि आदिवासी समुदाय वे हैं जो आज भी जंगलों में रहते हैं। आदिवासी जनजातियां ऐसे जंगली समुदायों (गोंड, मिजो, संथाल, कबूतरा, उरांव, मदारी, सपेरे, दरवेशी, पासी, कोली, पारदी, मीणा, गरसिया, डोंवारी) में से निकलकर कुछ समुदाय, लोग, गाँवो, कस्बों या शहरों में जीवनयापन करने लगे है, ऐसे लोगों के अपने समूह हैं जिन्हें आदिवासी जनजातीय समूह कहा जाता है। लेकिन आधुनिक सुख-सुविधाओं के अभाव में या कहें कि सरकारी उपेक्षा के कारण या स्वयं की अज्ञानता के कारण शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित ऐसे समूहों के लोग आज भी घुमंतू होकर जीवनयापन करते हैं। ऐसे लोगों के समूहों को जनजातीय समूह कहा जाता है। यद्यपि इन समुदायों अथवा समूहों को सरकारी संरक्षण-सुविधाएं प्राप्त है, लेकिन अधिकांशत: बाहर घूमने वाले ये जनसमुदाय सरकारी तंत्र से मिलने वाली सुविधओं से बेखबर ही बने रहे।

मनुष्य का प्रकृति से गहरा संबंध है। आज भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जीवन-यापन के लिए प्रकृति पर मनुष्य की निर्भरता किसी से छिपी नही है। वर्तमान भौतिकतावादी युग में मनुष्य की बढ़ती लालसाओं ने उसे प्रकृति से दूर कर दिया है। आज प्राकृतिक संसाधनों विशेषकर वन्य संपदाओं का अंधाधुंध दोहन हो रहा है, वनों के कटाव से जहाँ वन्य-जीव प्रजातियों पर खतरा मंडराने लगा है, वहीं सुदूर घने जंगलों में रहने वाले आदिवासियों के अस्तित्व पर भी संकट उत्पन्न हो गया है। वर्तमान युग में आदिवासी कौन.. ? यह विचारणीय है। मेरे विचार में प्रकृति की अपूर्व संपदा जल-जंगल और जमीन पर अपना पैतृक, नैतिक एवं दैवीय अधिकार मान जीवन जीने वाला कबीलाई समाज ही आदिवासी है। यह समाज सभ्य समाज की दूधिया रोशनी से दूर, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, संचार और कौशल से अनभिज्ञ अपने ही लोक में विचरण करता है, यानी इस समुदाय विशेष के जीवन जीने के तौर-तरीके, रीति-परम्पराएं, नियम, कायदे-कानून सब अलग हैं। यह आदिवास समाज है। दूसरी और सभी सुख सुविधाओं से लैस भारतीय संविधान में कानूनी वैधता प्राप्त सरकारी सुविधाओं का भरपूर लाभ उठाने वाली जनजातियां (शेड्यूल ट्राइब्स) हैं जिन्हें हम अज्ञानतावश आदिवासी होने का तगमा देते है। वह आदिवासी नही, न हो सकती हैं। ऐसा माना जा सकता है कि ये जनजातियां प्रारंभ में आदिवासी ही थी। आदिवासी विमर्श का केंद्र जंगल है। आदिवासी समाज कैसा है? वहाँ स्त्री समाज की स्तिथि क्या है? यह हमने अभी तक जाना ही नहीं है, केवल फिल्मों के माध्यम से या फिर मीडिया में समाचारों के जरिए आदिवासियों के प्रति अपनी अधूरी सोच को विकसित किया है। लेकिन यह सच है कि विश्वभर के समाजों में स्त्री की स्थिति आज भी शोचनीय है।

विषय प्रवेश: अस्मितामूलक विमर्शों में आदिवासी समाज एक ऐसा समाज है जो शिक्षा की रोशनी से कोसों दूर, प्रकृति के खुले आँगन में जाड़े, घाम को सहन करते हुए, सुदूर घने जंगली इलाकों में, नंग-धड़ंग अवस्था में, अपने गुप्तांगों पर वृक्षों की छाल या पत्तों को लपेटकर रहता है। भारत में अंडेमान निकोबार द्वीप समूह, उड़ीशा, आंध्रा, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के जंगलों में भौतिक सुख-सुविधाओं से वंचित आदिवासियों (आज के नक्सली) को देखा जा सकता है। भयंकर जंगली जानवरों के बीच रहने वाले आदिवासियों का जीवन-जोखिम से भरा है। आदिवासियों का जीवन शिकार और वनोपज पर आश्रित है। आदिवासी अपने भरण-पोषण के लिए पारम्परिक शस्त्र-अस्त्र, तीर-धनुष, बरछी-भालों से जंगली जानवरों सुअर, गोह, मछली, केकड़ा, छिपकली आदि का शिकार कर, फल-फूल चुनकर, कच्चा-पक्का खा-कर अपनी क्षुधा शांत करते हैं। हमारे साहित्यकारों को ऐसे ही आदिवासियों को साहित्यिक विमर्श का केंद्र बनाना चाहिए। आदिवासी अथवा कबीलाई समाज की अपनी सांस्कृतिक विरासत है जिसे वे सदियों से सहेजे हैं। औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया के चलते अब आदिवासी समाज का दायरा सिमटने लगा है। यह भी सच है कि प्रारंभ में मानव आदिवासीय अवस्था में जंगलों में ही रहता था। समय के साथ ये जंगली जातियाँ बाहर निकली, लेकिन जंगलों से बाहर भी इनके कबीले, संस्कृति, रीति-रिवाज, खान-पान आदि लंबे समय तक इनके साथ बने रहे, अब क्योंकि जंगलों से बाहर निकलकर ये लोग भी सामान्य जीवन जीने लगे। कुछ इलाकों में इन आदिवासी समुदायों के लोगों को जनजातियों में गिना जाता हैं, जो आज भी बदतर जीवन यापन कर रहे है, लेकिन उनकी सुनने वाला कोई नही है। हाँ, इतना जरूर है कि आधुनिक साहित्यकार ऐसे लोगों के पास जाकर थोड़ा-बहुत उनके जीवन को जान गया है और उन्हें ही आदिवासी मानकर आदिवासी विमर्श की बात करने लगा है, जबकि असली आदिवासी तो आज भी जंगल की खाक छान रहा है। जंगल से निकलकर कबीलों में रहने वाले ये लोग आजीविका के लिए देश के कोने-कोने में घूमते हैं, जिन्हें घुमंतू कबीले (जनजाति) कहा जाता है। अब भारत में घुमंतू जातियों जिनमें गढ़ी लोहार, बंजारे, गढ़रिये, टपरीवास, सपेरे, मदारी आदि जो वास्तव में संविधान के अनुसार जनजातियां (शेड्यूल ट्राइब्स) हैं। गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास और वैचारिक जड़ता ने इन्हें पशुओं से भी बदतर बना दिया है। शिक्षा के अभाव में तथा अपनी घुमंतू प्रवृति के कारण ये लोग सरकारी सुविधाओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाते है। वस्तुत: जनजाति कहा जाने वाला समुदाय एक ऐसा समुदाय हैं जो भौगोलिक दृष्टि से दुर्गम पहाड़ी या जंगली क्षेत्रों में, आजकल मैदानी भागों में भी सीमित संख्या में रहता है। सुदूर पहाड़ों या जंगलो में रहने वाले लोगों की अपनी भौगोलिक परिस्थितियां है। ये मौसम के अनुकूल स्वयं एक स्थान से दूसरे स्थान पर अस्थायी रूप में विस्थापित हो जाते हैं जबकि मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले ये लोग घुमंतुओं का-सा जीवन व्यतीत करते हैं तथा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुओं चिमटा, दरांत, खुरपी, सिपी, छाज

? खड़ा कर दिया कि अब जाएं तो कहाँ? विकास और भूमंडलीकरण की आंधी ने देश के युवाओं के सुनहरे भविष्य के सपनों को चौपट कर दिया। वास्तव में पश्चिमी देशों ने तीसरी दुनिया के देशों को विकास और प्रगति का जो मॉडल दिखाया वह बहुत खतरनाक है। यह मॉडल एक साथ हमारे इतिहास, ध र्म, दर्शन, सभ्यता, संस्कृति, भाषा और कला को मिटा देना चाहता है। यही उत्तर आधुनिकता का नवदर्शन है।

संदर्भ सूची:

1. रामनीज सिंह, वन विहंगिनी, पृष्ठ संख्या. 50
2. प्रतिभा राव, आदि भूमि, पृष्ठ संख्या.42
3. रमणिका गुप्ता, आदिवासी विकास से विस्थापन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली- 2008, पृष्ठ संख्या. 7
4. रणेन्द्र, ग्लोबल गांव के देवता, भारतीय ज्ञानपीठ, दूसरा संस्करण-2010 पृष्ठ संख्या. 34
5. वही, पृष्ठ संख्या. 13
6. वही, पृष्ठ संख्या. 16
7. वही, पृष्ठ संख्या. 17
8. वही, पृष्ठ संख्या. 52
9. वही, पृष्ठ संख्या.100
10. आदिवासी सत्ता, अक्टू.-नव. 2011, पृ. 11
11. महाश्वेता देवी, जंगल के दावेदार, पृष्ठ संख्या. 171